रक्षाबन्धन में पूरे विश्व को एकता के सूत्र में बांधने की ताकत

भारत देश विश्व गुरू होने के कारण यहाँ के प्रत्येक रस्म, रिवाज और पर्व में मनुष्य को सशक्त करने तथा एक ऐसा समाज बनाने के प्रयास का भाव होता है जहाँ मनुष्य शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक और सामाजिक रूप से खुशहाल और सुन्दर जीवन बना सके। इन पर्वों और रीति, रस्म, रिवाजों में रक्षाबन्धन का पर्व धागे का है, परन्तु बहुत शक्तिशाली है। रक्षाबन्धन का पर्व श्रावण मास में पूर्णिमा के समय मनाया जाता है। पूर्णिमा अर्थात चन्द्रमा का सम्पूर्ण रूप। श्रावण मास को वैसे भी परमात्मा शिव का मास मानते है। जिसमें भगवान भोलेनाथ की विभिन्न रूपों में पूजा की जाती है। वैसे तो यह पर्व आज के सन्दर्भ में भाई-बहन तक ही सीमित हो गया है। परन्तु यदि इसके अतीत पर नजर डाली जाये तो इसका प्रारम्भ भाई-बहन से न होकर सर्व मनुष्यात्माओं को आसुरी वृत्तियों से मुक्त होने का प्रमाण मिलता है। वास्तव में मनुष्य को विकारों, आसुरी संस्कारों तथा व्यभिचारों से मुक्त होने के लिए पवित्रता के बल की आवश्यकता होती है। जब मनुष्य पवित्रता को छोड़ अपवित्रता के राह पर चल पड़ता है तब उसे अनेक कठिनाईयों और समस्याओं का सामना करना पड़ता है। आत्मा की असली ताकत उसकी पवित्रता है। इसलिए पवित्रता के सागर परमपिता परमात्मा शिव के मास में इस पर्व की महत्ता का वर्णन है।

राखी के सन्दर्भ में बात की जाये तो आज इसका रूप बदलकर पाश्चात्य देशों के प्रभाव और संस्कृति के कारण केवल परम्परा के रूप में मनाया जाने लगा है। तरह-तरह विभिन्न प्रकार की सजी-सजाई फैशनेबल राखियों को भाई के कलाई में राखी बांधकर अपनी परम्परा पूरी कर लेते हैं। जबकि प्रारम्भ में जब इसकी शुरूआत हुई तो जब पुरूष युद्धभूमि में जाते थे तब उनकी धर्मपत्नियां भी रक्षाबन्धन बांधकर तथा माथे पर तिलक लगाकर उनके विजयी होने की कामना करती थी। इसके बाद ब्राह्मण भी केवल एक पीला पतला धागा अपने यजमानों को बांधते थे। जिससे रक्षासूत्र कहा जाता था। वह अब भी कहीं-कहीं प्रचलित है जब मनुष्य मंदिरों या कोई अनुष्ठान कराता है तब ब्राह्मण अथवा पुजारी हाथ में रक्षा सूत्र बांधता है तथा आध्यात्मिक शक्तियों से रक्षा करने की कामना करता है। यदि यह रक्षाबन्धन केवल भाई-बहनों तक ही सीमित था तब असुरों और देवताओं के युद्ध में इन्द्राणी ने इन्द्र को रक्षाबन्धन क्यों बांधा था। क्योंकि वे तो आपस में पति और पत्नी थे। अथवा ब्राह्मण यजमानों को रक्षासूत्र क्यों बांधते थे। इसके बारे में आज प्रत्येक व्यक्ति को इसके बारे में सोचने की आवश्यकता है।

रक्षाबन्धन की आध्यात्मिक व्याख्या: रक्षाबन्धन का अर्थ ही होता है रक्षा के लिए बन्धन। हालॉकि बन्धन किसी को भी प्रिय नहीं होता है। परन्तु यहाँ इसका अर्थ यही है कि अपनी उन आसुरी प्रवृत्तियों से रक्षा के लिए मर्यादाओं के बन्धन में बंधना जिसके कारण हमें कई प्रकार की समस्याओं का सामना करना पड़ता है। वास्तव में यह बन्धन नहीं बल्कि स्वतंत्रता है। क्योंकि जो व्यक्ति आसुरी शक्तियों से मुक्त है वह इस दुनियां में सबसे स्वतंत्र है। मनुष्यात्माओं को आसुरी शक्तियों से रक्षा करने तथा दैवी शक्तियों के आह्वान करना ही इस रक्षाबन्धन का उद्देश्य है। रक्षाबन्धन का प्रारम्भ यदि ईश्वरीय सन्दर्भ में देखा जाये तो श्रावण मास परमात्मा शिव का मास माना जाता है। उसमें भी पूर्णिमा के समय मनाया जाता है। इसका अर्थ यही है कि स्वयं परमात्मा ने इसकी प्रारम्भ की है। इस पर्व के पीछे यही संदेश है कि भाई-बहन की समान पवित्रता सर्व मनुष्यों को सर्व प्राणियों के प्रति धारण करना चाहिए। इससे ही वह सोलह कला सम्पन्न,

सम्पूर्ण सतोप्रधान बन सकता है। क्योंकि जब तक अपवित्रता का दाग है तब तक न तो वह सम्पूर्ण हो सकता है और न हीं वह आसुरी संस्कारों से अपनी रक्षा कर सकता है। इसका महात्म्य भूलने के कारण ही आज भाई-बहन के रिश्तों पर भी अंगुली उठने लगी है।

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में रक्षाबन्धन की आवश्यकताः वर्तमान परिवेश में मानवीय मूल्य और मर्यादायें तार-तार हो रही है। अपवित्रता का साम्राज्य होने के कारण चारो तरफ हिंसा और व्यभिचार का बोलबाला है। मनुष्य ही मनुष्य की मर्यादाओं को तोड़ने पर आमदा है। एक दूसरे की रक्षा तो दूर एक दूसरे का शील भंग करने का महान दानव अपना पैर पसार चुका है। आज कोई भी इस दानव से सुरक्षित नहीं है। संसार में सर्वश्रेष्ठ कहे जाने वाले मानव के राज्य में ऐसी घटनायें हो रही है जिसकी कल्पना करना कठिन है। आतंकवाद, भ्रष्टाचार, हिंसा, बालात्कार, अत्याचार जैसी भयानक स्थितियों ने समाजिक व्यवस्था तथा एकता के सूत्र को खण्ड-खण्ड में तोड़कर रख दिया है। इन सभी मानवीय विभिषिका का दोषी खुद मनुष्य है। आज न तो सच्चे ब्राह्मण रहे और न ही रक्षाबन्धन की शक्ति। इसलिए अब पुनः समय की मांग है कि रक्षाबन्धन का विधि-विधान अनुसार महात्म्य को जान इसे अपने जीवन में दृढ़ संकल्प से अपनाये तभी हमारे अन्दर छिपे उन आसुरी विकारों से रक्षा हो सकती है जो हमें बुरा कार्य करने के लिए प्रेरित करते हैं।

रक्षाबन्धन पर्व पर ईश्वरीय संदेशः पुनः भाई-बहन के पवित्र रिश्ते को पुनर्स्थापित करने, एक श्रेष्ठ और मूल्यनिष्ठ समाज की स्थापना करने, सदभाव पूर्ण संसार की रचना, पूरे विश्व को एकता के सूत्र में बांधने तथा सर्व मनुष्यात्माओं को पवित्रता के संकल्प में बंधकर सच्चे-सच्चे ब्राह्मण बनकर हर एक को इसकी पहल करने का ईश्वरीय संदेश है। परमात्मा शिव पुनः अवतरित होकर अपने दिव्य कर्मों द्वारा ईश्वरीय ज्ञान और राजयोग की शिक्षा से सच्चे-सच्चे ब्राह्मणों की रचना कर रहे हैं। हम सभी मनुष्यात्मायें एक शिवपिता की संतान आपस में भाई-बहन है इसलिए हमें एक दूसरे की पवित्रता की रक्षा के लिए इस रक्षाबन्धन को अपने पवित्र रहने और दूसरे के लिए प्रेरित करने के दृढ़ संकल्प के साथ बांधने की आवश्यकता है। यह समय परिवर्तन का समय है। आसुरी दुनियां समाप्त होकर दैवी दुनियां के आगमन का है। इसलिए हम परमात्मा द्वारा दिये जा रहे पवित्रता के इस प्यारे बन्धन को समझकर अपने जीवन में उतारते हुए इसकी एक ऐसे समाज की स्थापना में मददगार बने जहाँ सिर्फ पवित्र रिश्तों का साम्राज्य हो। इस दृष्टिकोण से रक्षाबन्धन का पर्व मनाने की आश्यकता है तभी इसकी सार्थकता है। यही ईश्वरीय संदेश है और भाई-बहन का त्योहार रक्षाबन्धन का भी। तो आईये इस पवित्र पर्व पर इस संकल्प के साथ रक्षाबन्धन का पर्व केवल भाई-बहन तक ही नहीं बल्कि सर्व लोगों के साथ यह पर्व मनायें।

– ब्रह्माकुमारीज् वार्ता फिचर्स

www.bkvarta.com